BA - I
Paper - II
Unit - 2

Dr. Raj Gopal,
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy,
V.S.J. College Rajnagar
Mail ID:- rajgopal7765@gmail.com

Topic:→ Descartes as Father of Modern Western Philosophy

(देकार्त आधुनिक दर्शन प्रणाली के पिता)

देकार्त को आधुनिक दर्शन प्रणाली का पिता इसलिए कहा जाता है कि वे सर्वप्रथम दर्शन के क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रणाली (Scientific method) का प्रयोग किये थे। देकार्त के पहले का दर्शन अन्धविश्वास एवं रूढ़िगत परम्पराओं से ग्रसित था। ज्ञान का उद्गम तर्क या बुद्धि ना होकर धार्मिक विश्वास था। देकार्त के समय में ईसाई धर्म का वर्चस्व था। चर्च के नियमों के विरुद्ध चिंतन करने वाले दार्शनिकों को मृत्युदण्ड तक की सजा दी जाती थी। दर्शन पर धर्म का आधिपत्य था। इस प्रकार से दर्शन स्वतंत्र चिंतन का विषय वस्तु ना होकर धर्म के समान आस्था और अन्धविश्वास का केन्द्र बन गया है। इसी कारण दर्शनशास्त्र विवादों का अखाड़ा (Battle ground of Controversy) बन गया था। देकार्त ने सर्वप्रथम दार्शनिक विवादों को दूर करने के लिए एवं दर्शन के क्षेत्र में निश्चित एवं सर्वमान्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए बुद्धि का प्रयोग किया। इसे निगमन विधि (Deductive Method) कहा जाता है। देकार्त के परवर्ती बुद्धिवादी विचारकों ने इसी पद्धति के आधार पर अपने अपने दार्शनिक सिद्धान्तों को विकसित किया। इसी कारण देकार्त को आधुनिक युग में बुद्धिवादी विचारधारा का प्रवर्तक माना जाता है।

Scanned with CamScanner

देकार्त का दार्शनिक पद्धति गणित के ज्यामितिय विधि से प्रभावित है। जिस प्रकार से ज्यामिति के कुछ प्रमेयों के आधार पर ज्यामिति के सैकड़ों प्रश्नों का हल हो जाता है एवं अनेकों उपप्रमेयों को सिद्ध करते हैं। उसी प्रकार से देकार्त का मानना है कि हमारे मन में कुछ सहज एवं जन्मजात प्रत्यय होते हैं। इन प्रत्ययों के निगमन के द्वारा ही हम वास्तविक ज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं। देकार्त का कहना है कि "मेरी यह इच्छा है कि कोई व्यक्ति किसी सिद्धान्त पर तब तक विश्वास न करे, जब तक वह उसको किसी अकाट्य और स्पष्ट तर्क के आधार पर स्वयं सत्य नहीं समझता हो। इस प्रकार से देकार्त ने सर्वप्रथम दर्शन को अन्धविश्वास से निकालकर तर्क एवं बुद्धि के कसौटी पर कसने का प्रयास किया।

देकार्त के अनुसार प्रतिभान (Intuition) एवं निगमन दोनों दार्शनिक चिंतन के लिए आवश्यक हैं। प्रतिभान अर्थात मौलिक ज्ञान बुद्धि का स्वाभाविक प्रकाश है। यह कोई संख्यात्मक ज्ञान नहीं है, बल्कि स्वतः सिद्ध सत्य का आधार है। यह पूर्णतः सुस्पष्ट तथा सुनिश्चित होता है। यह मौलिक ज्ञान है। यह सभी ज्ञान का आधार है। निगमन यह अनुमान जन्य ज्ञान है। यह सहज ज्ञान पर आधारित है। सहज ज्ञान अर्थात आधार वाक्य से ही निगमन अर्थात निष्कर्ष निकाला जाता है।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार से आधार वाक्य सत्य होने के कारण उससे निगमित निगमनात्मक वाक्य भी सत्य होगा। इस प्रकार से सहज ज्ञान तथा अन्तर्बोध दोनों ही ज्ञान प्राप्ति के साधन हैं। इसे एक उदाहरण के द्वारा देख सकते हैं।

3+2 का योग = 5

4+1 का योग = 5

अतः 3+2 का योग = 4+1 का योग।

इसमें प्रथम दो तर्कवाक्य स्वतः सिद्ध सत्य हैं। ये प्रतिज्ञप्ति पर आधारित हैं। किन्तु निगमित वाक्य (अ=4+1) प्रथम दो वाक्यों के आधार पर निगमित किया गया है। अतः सत्य ज्ञान तथा निगमन दोनों के द्वारा हम ज्ञान प्राप्त करते हैं। देकार्त के अनुसार दार्शनिकों को भी स्पष्ट एवं स्वतः सिद्ध नियमों के आधार पर अन्य अज्ञात नियमों को ज्ञात करना चाहिए।

देकार्त का मानना था कि दार्शनिकों को पक्षपात पूर्वाग्रहों और पूर्व मान्यताओं से मुक्त होकर दार्शनिक अनुचिन्तन करना चाहिए। जब तक वे स्पष्ट और विवेकपूर्ण न हो तब तक उसे स्वीकार नहीं करना चाहिए। देकार्त के दर्शन में स्पष्टता एवं विवेकपूर्णता प्रामाणिक ज्ञान की कसौटियाँ हैं। इसमें स्पष्टता का प्रयोग साक्षात अनुभव के अर्थ

Scanned with CamScanner

में किया गया है। इसके विपरीत विवेकपूर्ण वह है जो इतना निश्चित हो कि उसके अन्तर्गत केवल उतनी ही बातें सम्मिलित हो जितना की उसको जानने वाला प्रकट रूप में देखता और समझता हो। इस प्रकार से स्पष्ट और विवेकपूर्ण ज्ञान ही मौलिक ज्ञान है। इस प्रकार से देकार्त ने सभी पौराणिक मान्यताओं, लोकमत, आदि को स्पष्टता एवं विवेकपूर्णता के कसौटी पर कसा जो उस पर खड़ा उतरा उसे सत्य ज्ञान माना एवं जो नहीं खड़ा उतरा उसे वास्तविक ज्ञान नहीं माना। इस प्रकार से देकार्त दर्शन के क्षेत्र में तर्क एवं बुद्धि का प्रयोग करके नवीन क्रांति का सूत्रपात किया। इन्होंने आधुनिक दर्शन को एक नवीन दिशा दिया। इसी कारण देकार्त को आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का पिता कहा जाता है। देकार्त के पूर्व के दार्शनिक ज्ञान का उद्‌गम विश्वास को मानते थे। वहीं देकार्त इसके विपरीत विश्वास के लिए ज्ञान की आवश्यकता पर बल दिया। इसलिए पाश्चात्य दर्शन के क्षेत्र में देकार्त का अमूल्य योगदान है।